स्वराज्य पार्टी

⇒ असहयोग आन्दोलन को रोके जाने से तात्कालिक रूप से राष्ट्रवादियों के बीच हताश की भावना फैल गई।

⇒ और कांग्रेसी नेताओं में मतभेद उभर आया।

(स्वराज्यवादी)/(परिवर्तनवादी)
विधानमण्डलों का बहिष्कार कर उसमें भाग लेना चाहिए
Ex- चितरंजन दास
मोतीलाल नेहरू
मदन मोहन मालवीय, विट्ठलभाई पटेल
जयकर।

(अपरिवर्तनवादी)
विधान मंडल में प्रवेश का अब भी विरोध किए
Ex- वल्लभभाई पटेल,
अंसारी, राजेन्द्र प्रसाद

⇒ परिवर्तनवादियों का कहना था कि विधान मंडल में प्रवेश कर सरकारी कार्यों में बाधा डालेगें, सरकार की कमजोरी को उजागर करेंगे और वहाँ से राजनीतिक संघर्ष का क्षेत्र बनाएंगे जन उत्साह जगाने में उसका उपयोग करेगें।

⇒ अपरिवर्तनवादियों का कहना था कि अगर हम विधानमंडल में प्रवेश करते है तो जनता के बीच काम की उपेक्षा होगी जिससे राष्ट्रवादी उत्साह कमजोर पड़ जाएगी और आपस में मतभेद बढ़ जाएगा इसलिए ये लोग चरखा चलाने, चरित्र निर्माण, हिन्दू- मुस्लिम एकता छुआ छूत उन्मूलन और रचनात्मक कार्यों पर बल दिया।

उनका मानना था कि इससे धीरे -धीरे जनता संघर्ष के लिए एक बार पुनः तैयार होगा।

1922 का गया अधिवेशन

⇒ Dec 1922 में कांग्रेस का वार्षिक अधिवेशन गया में हुआ जिसका अध्यक्ष → चितरंजन दास को बनाया गया।

⇒ इस अधिवेशन में चितरंजनदास तथा उसका सहयोगियों ने

विधान परिषद में प्रवेश पाने के लिए प्रस्ताव लाया लेकिन अपरिवर्तनवादियों ने उसका विरोध किया जिससे यह प्रस्ताव पास न हो सका। अतः मोतिलाल नेहरू तथा चितरंजन दास एवं उसके सहयोगियों ने कांग्रेस से त्यागपत्र दे दिया।

1 जनवरी 1923 को इलाहाबाद में कांग्रेस-खिलाफत स्वराज्य पार्टी की स्थापना किये।

अध्यक्ष → चितरंजन दास

सचिव → मोतिलाल नेहरू

⇒ स्वराज्यवादियों ने 1923 के होनेवाले चुनाव में भाग लेने का निर्णय लिया।

ध्यान दे :- स्वराज और अपरिवर्तनवादी भले ही अपने-अपने ढंग से काम कर रहे थे लेकिन उनके बीच कोई बुनियादी मतभेद नहीं था। जब एक नए राष्ट्रीय संघर्ष का समय आया तो दोनो गुट आसानी से एकजुट हो गए।

⇒ Sep 1923 में दोनों पक्षों के मध्य एक समझौता हुआ। स्वराजियों को कांग्रेस का एक अंग स्वीकार किया गया। स्वराजियों ने भी केवल एक शर्त छोड़कर (विधान परिषदों में भाग न लेने की मुद्दा) बाकी ~~सभी शर्तें~~ कांग्रेस के सभी कार्यक्रमों को स्वीकार कर लिया गया।

⇒ Nov-1923 में चुनाव होने वाला था स्वराजवादियों ने इस चुनाव में भाग लेने का निश्चय किया।

Scanned with CamScanner

स्वराजियों का 'चुनाव घोषणा पत्र :- oct 1923

* चुनाव घोषणा पत्र में स्वराजियों ने साम्राज्यवाद के विरोध को अपना प्रमुख मुद्दा बनाया।

प्रमुख बातें :- * भारत पर अंग्रेजी हुकुमत का मुख्य लक्ष्य, इंग्लैण्ड के स्वार्थी हितो की पूर्ति करना है।

* अंग्रेजो की वास्तविक मंशा भारत के असिमित संसाधनों का अन्यायपूर्ण दोहन तथा भारतीय जनता को गुलाम बनाकर रखना।

* स्वराजी, स्वशासन की राष्ट्रवादियों की मांग को परिषदों में उठायेंगे।

* अगर सरकार ने उनके मांगो की नामंजूर कर दिए, तो वे संयुक्त प्रयासों द्वारा परिषदों की कार्य को संचालित करने में अवरुद्ध पैदा करेंगे।

Nov-1923 का चुनाव और स्वराजियो की सफलता

Nov 1923 में चुनाव सम्पन्न हुए चुनाव में स्वराजियों को उल्लेखनीय सफलता मिली।

केन्द्रीय विधान परिषद में 101 सीटों में से 42 सीटों पर धाक जमाये

मध्य प्रान्त में इन्हे स्पष्ट बहुमत मिला

बंगाल में ये सबसे बड़े दल के रूप में उभरा

तथा U.P तथा बम्बई में भी इन्हे अच्छी सफलता मिलि

=) केन्द्रीय विधान परिषद में 24 सीट पर कब्जा इंडिपेंडेंट दल (जिन्ना का) का था।

=) स्वराजियों ने जिन्ना के पार्टी, तथा मदनमोहन मालवीय के पार्टी

Scanned with CamScanner

साथ मिलकर केन्द्रीय विधान परिषद में संयुक्त मोर्चा बना लिया।

⇒ कुछ समय बाद ~~[illegible]~~ आंतकवाद को नियंत्रित करने के नाम पर सरकार ने नागरिक अधिकारों तथा ~~स्व~~ स्वराजियों का दमन करना प्रारम्भ कर दिया।

⇒ ~~स्वराजियों~~ 1924 के आते-आते स्वराजियों की स्थिति कमजोर हो चुकी थी।

⇒ इसी बीच (1924) गाँधी जी स्वराजियों को साथ देने का निश्चय किया।

⇒ 16 June 1925 को C.R. दास की मृत्यु से उन्हे और गहरा आघात लगा।

⇒ लाला लाजपत राय, मदन मोहन मालवीय तथा N.C. केलकर ने सरकार के साथ समर्थन तथा हिन्दू हितों की रक्षा के लिए सत्ता में यथासंभव भागीदारी की वकालत की। और मोतिलाल नेहरू जैसे अ-प्रतिक्रियावादियों पर आरोप लगाया कि वे मांसाहारी तथा हिन्दू हितों के विरोधी है कहकर स्वराज पार्टी छोड़ दी।

⇒ Note:- साइमन आयोग ने सन् 1922 - 1927 के बीच 112 आंतकवादी घटना घटने का उल्लेख किया।

⇒ अंततः 1930 ~~के~~ में सविनय अवज्ञा आन्दोलन छिड़ जाने के कारण ~~स्व~~ स्वराजवादियों ने विधान मंडल का दामन छोड़ दिया।

Scanned with CamScanner

स्वराजियों की उपलब्धि

* ये बजट को प्रत्येक वर्ष अस्वीकृत कर देते थे परिणामस्वरूप वायसराय को अपने विशेषाधिकार इसे पारित करना पड़ता था इस तरह इन्होने नए विधानमण्डलों का असली चरित्र उजागर किया गया।

* स्वराजवादियों ने उत्तरदायी शासन की स्थापना करने के लिए गोलमेज सम्मेलन बुलाने का सुझाव दिया।

* इनकी मांगो के परिणामस्वरूप 1924 ई० में सरकार ने 1919 के अधिनियम की समीक्षा के लिए **मुड्डीमैन कमेटी** का गठन किया गया।

* 1924 में स्वराजियों के प्रयास के कारण सरकार ने टाटा को उद्योग को संरक्षण दिया

* 1925 ई० में विट्ठलभाई पटेल को केन्द्रिय विधान परिषद का अध्यक्ष बनाया गया।

* 1925 में मोतीलाल नेहरू ने स्कीन कमेटी की सदस्यता स्वीकार कर लिया
  (स्कीन कमेटी → सेना की भर्ती करने के लिए)

* 1928 में सरकार ने Public safety Bill (PSB) को लाया लेकिन उसके विरोध में मत देकर उसे असफल कर दिया। स्वराजवादियों की महत्वपूर्ण उपलब्धि थी। इस विधेयक को भारतीय गुलामी विधेयक नम्बर एक की संज्ञा दी

गाँधी - दास पैक्ट 1924 ई.

5 feb 1924 को गाँधी जी को जेल से रिहा कर दिया गया

Nov. 1924 में गाँधी जी और चितरंजन दास के बीच एक समझौता हुआ जिसे गाँधी-दास पैक्ट कहते हैं उस

Scanned with CamScanner

समझौते में हुई बातो को काँग्रेस के बेलगाँव अधि० 1924 में स्वीकार कर लिया गया

⇒ इस समझौते में कहा गया की असहयोग अब राष्ट्रीय कार्यक्रम न रहेगा। इसका अर्थ यह हुआ की असहयोग की बात बिल्कुल बंद कर दी गई ताकि हिन्दुस्तान की स्वार्थों की रक्षा और दमन के नीति के विरुद्ध विभिन्न गुट और पार्टियाँ मिलकर काम कर सके।

⇒ स्वराज पार्टी को अधिकार दे दिया गया कि वह कांग्रेश के अभिन्न अंग के रूप में काम करे।

⇒ गाँधी जी के जिम्में ऑल इंडिया स्पिनर एसोसिएशन को संगठित करने और सम्पूर्ण देश में चरखा का प्रचार करनें का कार्य दिया गया।

पतन के कारण

(i) देशबंधु चितरंजन दास की मृत्यु

(ii) सरकार को सहयोग की नीति :- प्रारंभ में सरकार को असहयोग किया परन्तु बाद में सरकार को सहयोग करने लगा।

(iii) 1926 के निर्वाचन में प्रत्याशित सफलता न मिलना

(iv) स्वराज्य दल में मतभेद

(iv) वे विधान मंडलों की शक्तियों एंव विशेषाधिकारों का पूर्ण उपयोग करने में असफल रहा।

(v) पार्टी में घुसपैठ कर रहे सम्प्रदायिक तत्वों को रोकने में असफल रहा।

Scanned with CamScanner

साइमन कमीशन 1928

↳ भारतीय संविधिक आयोग

पृष्ठभूमि :

⇒ ~~1919 के एक्ट में उल्लेख था कि यहाँ अधि~~

⇒ 1919 ई० के भारत शासन अधिनियम में कहा गया था कि, अधिनियम के पारित होने के 10 वर्ष बाद एक वैधानिक आयोग का गठन किया जाएगा, जो यह निर्धारित करेगा कि यह अधिनियम व्यवहारत: कहाँ तक सफल रहा।

व्यक्ति :- ब्रिटेन प्रधान मंत्री :- बाल्डवीन (कनजरवेटिव दल)

भारत सचिव → ~~[illegible]~~ बर्केनहेड़

वायसराय → इरविन

ब्रिटेन सरकार ने दो वर्ष पहले ही इंडियन स्टेट्यूटरी कमीशन का गठन किया।

→ NOV-1927

इस कमीशन का अध्यक्ष → सर जॉन साइमन थे।

इसमें कुल → 7 सदस्य थे (सभी अंग्रेज)

- जॉन साइमन (लिबरल पार्टी सदस्य)
- बार्नोन हार्टसोन
- स्ट्रेथ कोना
- क्लीमेंट एटली (लेबर पार्टी) ~~[illegible]~~
- कर्नल बर्नहम
- जॉर्ज लेनफोक्स
- एडवर्ड केडोगन

विरोध का कारण :-

(i) कमीशन की नियुक्ति दो वर्ष पूर्व होना

(ii) भारतीयों को शामिल नहीं करना

Scanned with CamScanner

रोचक तथ्य :- इरविन ने दो भारतीयों का नाम भेजा था लेकिन बाद में वापस ले लिया :-
(i) मो॰ अली जिन्ना
(ii) तेज बहादुर सप्रु

⇒ विरोध

1927 ई॰ में मद्रास में हुए कांग्रेस के वार्षिक अधिवेशन में साइमन कमीशन के बहिष्कार का निर्णय लिया गया।
अध्यक्षता → M. A. अंसारी

⇒ जिन्ना ने भी बहिष्कार किया।
⇒ हिन्दू महासभा ने भी बहिष्कार का समर्थन किया

समर्थन :- मद्रास की जस्टिस पार्टी,
पंजाब की यूनियनिस्ट पार्टी,
अखिल भारतीय अछूत फेडरेशन
मो॰ ~~जिन्ना~~ वाला सफी वाले मुस्लिम लीग का एक गुट

⇒ आयोग 3 feb 1928 को बम्बई पहुँचा तो इसका भयंकर जगह-जगह विरोध हुआ। अखिल भारतीय हड़ताल का आयोजन हुआ।

⇒ साइमन का स्वागत काले झण्डे दिखाकर किया गया 'साइमन वापस जाओ' के नारे से पूरा बंम्बई गूंज उठा।

Note :- 1928 - 29 के बीच में कमीशन ने भारत में दो बार यात्रा किया।
और मई 1930 में अपनी रिपोर्ट प्रस्तुत कर दी जिस पर लन्दन में आयोजित होने वाले वाले गोलमेज सम्मेलन में विचार होने वाला था।

Scanned with CamScanner

टिप्पणी → सर शिवस्वामी अय्यर ने इसे रद्दी की टोकरी में फेंकने लायक बताया।

जन-प्रतिक्रिया :

→ बम्बई पहुँचते ही देश के सभी प्रमुख नगरों में हड़तालों एवं जुलूसों का आयोजन किया गया।

→ केंद्रीय विधानसभा ने भी साइमन का स्वागत करने से इंकार कर दिया।

Note:- साइमन गो बैक का नारा यूसुफ मेहर अली ने दिया।

⇒ लखनऊ में साइमन का अधिवेशन हो रहा था वहाँ पर खलीकुज्जां ने पतंग और गुब्बारे पर simon goback लिखकर उड़ा दिया जो एक अधिवेशन में गिर गया।

⇒ लाहौर में लाला जी के नेतृत्व में साइमन का विरोध किया जा रहा था। उसी दौरान पुलिस ने लाठी चार्ज किया और लाला जी के सर पर चोट लगने से लाला जी की मृत्यु हो गई।

उसी दौरान लाला जी ने बोले →

"मेरे ऊपर जो लाठियों का प्रहार किया गया है वही एक दिन ब्रिटिश साम्राज्य की आखिरी कील साबित होगी।"

पुलिस अधिकारी → सांडर्स

बर्केनहेड ने भारतीयों को कहा की आप गलत विरोध कर रहे है, आप सभी मिलकर एक संविधान बनाइए तो हम आपको डोमेनियन स्टेटस दे देंगे।

Scanned with CamScanner

उसी के कहने पर 1928 में नेहरू रिपोर्ट तैयार किया गया था।

⇒ <u>साइमन कमीशन का प्रतिवेदन</u>

(i) द्वैध शासन को समाप्त कर उत्तरदायी शासन की स्थापना

(ii) भारत के लिए संघीय संविधान होना चाहिए

(iii) केन्द्र में भारतीयों को कोई भी उत्तरदायित्व न प्रदान किया जाय।

(iv) उच्च न्यायालय को भारत सरकार के नियंत्रण में कर दिया जाय।

(v) बर्मा को भारत से विलग किया जाय उड़ीसा को एवं सिन्ध को अलग प्रदेश का दर्जा दिया जाय

(vi) प्रान्तीय विधानमण्डलों में सदस्यों की संख्या को बढ़ाया जाए।

(vii) मताधिकार का विस्तार करने 2.8% से बढ़ाकर 10% – 15% तक बढ़ाने की बात

(viii) गवर्नर जनरल अल्पसंख्यक जातियों के हितों के प्रति विशेष ध्यान रखें इत्यादि।

Scanned with CamScanner